International Journal of Humanities and Social Science Research
ISSN: 2455-2070; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 05-01-2019; Accepted: 11-02-2019
www.socialsciencejournal.in
Volume 5; Issue 2; March 2019; Page No. 57-59

खजुराहो नगर : उद्‌भव और विकास की अवधारणा का ऐतिहासिक अध्ययन

डॉ० नृपेन्द्र सिंह परिहार
प्राचार्य, डी०आर०एस० बी०एड० कालेज, गंगापुर, जिला रीवा, मध्य प्रदेश, भारत।

सारांश
इस शोध पत्र में खजुराहो नगर : उद्‌भव और विकास की अवधारणा का ऐतिहासिक अध्ययन कर रहे हैं। इस अंचल के आदिम नगर उतने ही पुराने है जितनी यहाँ की सभ्यता। प्रागैतिहासिक कालीन इन आदिम नगरों की सभ्यता धीरे–धीरे ऐतिहासिक काल में प्रवेश करती है और केन घाटी के तलहटी क्षेत्र में बसने वाली यह सभ्यता स्थिर होती है। केन नदी के अंचल में स्थिर होने वाली इस समय के लघुनगरीय अवशेष बिखरे हुए रूप में देखने को मिलते है। केन, धसान व वेतवा नदियों की यह नगरीय सभ्यता ऐतिहासिक काल में विशेष रूप से विकसित होती है। बौद्ध युग में पांचवी से दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व के काल में यह नगरीय सभ्यता खजुराहो अंचल में विशेष रूप से विकसित होती है। यह नगरीय सभ्यता यहाँ के नदी घाटियों में ही फैली है, क्योंकि नदी घाटियों में भोजन, पानी व यातायात की सुविधायें उपलब्ध होने के कारण इन नगरों के विकास को बल मिलता है।

मूल शब्द : खजुराहो नगर, उद्‌भव, विकास, नगरीय बसाहट, अवधारणा।

प्रस्तावना
नगरों के उद्‌भव से तात्पर्य नगरों की उत्तपत्त के कालिक पक्ष से है। जब कोई अधिवास नगर बन जाता है तो वह उसकी उत्पत्ति का समय होता है। नगर की उत्पत्ति दो प्रकार से होती है। कुछ अधिवास छोटी बस्ती के रूप में बसाये जाते है लेकिन अनुकूल परिस्थिति में अपने क्रियाकलाप बढ़ाकर नगर का रूप धारण कर लेते है। जिस समय वे नगर कहलाने लगते है। यह अवस्था उनके उद्‌भव की प्रतीक है। अधिकांश नगरों की उत्पत्ति इसी प्रक्रिया से होती है। परन्तु कुछ विशेष प्रयोजन से नगर बसाये जाते है।[1] यह उनकी उत्पत्ति की दूसरी विधा है। अधिकांश राजधानी, प्रशासकीय और कुछ व्यापारिक–औद्योगिक नगरों की उत्पत्ति एवं निश्चित कालखण्ड में हो जाती है। स्पष्ट है कि कुछ अधिवास नगर बनते और कुछ बनाये जाते है। सभी युगों में यह प्रक्रिया क्रियाशील रही है।

नगरों के विकास से तात्पर्य उनके स्वरूप और कार्य में वृद्धि से है। सीमित कार्यों के चलते उनका आकार और विस्तार मन्द गति से वृद्धिमान रहता है जबकि अधिक कार्य सम्पादन से जनसंख्या बढती है तो उनकी आकृति को विकसित करती है। नगरीय जनसंख्या की बढ़ती आवश्यकता के साथ परिक्षेत्र की जनसंख्या की मांग भी बढ़ने लगती है क्योंकि नगर केन्द्रस्थल होता है। मांग के बढ़ने से नगर की वृद्धि होती है फलतः एक छोटा नगर महानगर में बदल जाता है जो उसके कालिक और स्थानिक पक्ष को रेखांकित करता है। कुछ विपरीत परिस्थितियाँ भी उत्पन्न हो जाती है जिससे विकास रुक जाता है या नगर का आस्तित्व मिट जाता है। नदी किनारे पर जन्मा नगर बाढ़ या अपरदन से नष्ट हो जाता है। प्राकृतिक प्रकोप के अतिरिक्त मानवीय कारणों से भी ऐसी घटनायें हो जाती है।[2] प्राचीन नगरों के भग्नावशेष इसके प्रमाण है।

नगरों के विकास का स्थानिक पक्ष भी महत्वपूर्ण है जो नगर बसाये जाते हैं उनका धरातलीय विन्यास पूर्व नियोजित होता है जबकि जो अधिवास विकसित होकर नगर बनते है उनका धरातलीय विन्यास विकास अवस्थाओं के अनुसार बहुआयामी होता है। चण्डीगढ़ के धरातलीय विन्यास और दिल्ली के धरातलीय विन्यास में इसीलिये अन्तर है जो नगर प्राकृतिक या कृत्रिम घेरे में जन्म लेते है जैसे तंग घाटी, सर्पिल मोड़, जलीय या स्थलीय अवरोध तथा कृत्रिम खाई या चहारदीवारी उनका स्थलीय विन्यास विशिष्ट रूप ग्रहण कर लेता है जबकि बाधा रहित समतल धरातल पर जन्में नगर का फैलाव सहज होता है जैसे पटना और वाराणसी। प्राचीन कालीन नगरों के विस्तार प्रारूप की तुलना में आधुनिक कालीन नगरों का धरातलीय फैलाव भिन्न पाया जाता है क्योंकि तकनीकी उन्नति से स्थलीय अवरोधों को कम कर दिया जाता है जिससे नगर का फैलाव सुगम हो जाता है।

नगरों की उत्पत्ति और विकास के कारक
नगर क्यों और कहाँ जन्म लेते हैं और उनके विकास को कौन कारक प्रमुख रूप से नियंत्रित करते हैं, इस पर भी विचार करना आवश्यक है। प्राचीन काल से आधुनिक काल तक नगरों के अभ्युदय और विकास के लिए विविध कारक क्रियाशील रहे है। यह स्वीकार तथ्य है कि नदियों की समतल, उपजाऊ और सिंचित भूमि में अधिक उत्पादन के संचय संरक्षण और वितरण के लिए आदि नगरों का अभ्युदय हुआ।[3] सुरक्षा, पेय जल और परिवहन की सुविधा के कारण ऐसे नगरों को नदी तट पर बसाया गया। कालान्तर में प्रशासनिक नियंत्रण के लिए मुख्यालय एवं राजधानी नगर बसाये गये जैसे अयोध्या, काशी, मथुरा, इन्द्रप्रस्थ आदि। सामाजिक संगठन और शिक्षा–संस्कृति के उत्थान के लिए भी नगरों को बसाया गया जैसे तक्षशिला, नालन्दा आदि। अनेक नगर धार्मिक क्रियाकलाप के कारण अस्तित्व में आये जैसे चन्देल कालीन नगर खजुराहों, भारत के अतिरिक्त यूनान, मिश्र, चीन, मेसोपोटामिया और भूमध्य सागर के तटवर्ती भागों में कृषि, सुरक्षा, व्यापार, उद्योग, धर्म और राजनीति के कारण नगरों का अभ्युदय हुआ। यूनान में नगर राज्यों का अभ्युदय उसी क्रम में हुआ। एथेन्स, स्पार्टा कोटिन्थ आदि इसी प्रक्रिया में जन्में। रोम नगर का अभ्युदय यूरोप की महान ऐतिहासिक घटना है जिसने रोमन साम्राज्य और सभ्यता को जन्म दिया। रोमन साम्राज्य के वास्तुविदों ने सम्पूर्ण यूरोप में नगर रचना की अनूठी प्रक्रिया शुरू की। उस युग के नगर यूरोपीय इतिहास और संस्कृति के विरासत है। मध्यकाल में प्रशासन, युद्ध, व्यापार, परिवहन, धर्म, शिक्षा और कृषि विकास के कारण नगर निर्माण की प्रक्रिया चलती रही। इस युग में सुरक्षा की प्रधानता के कारण सुरक्षित स्थानों पर चहारदीवारी के अन्दर नगर बसाये

गये। भारत के 'गढ़नगर' और यूरोप के बारों या वग्र नाम से युक्त नगरीय अधिवास ऐसे ही नगर थे।

आधुनिक युग में परिवर्तित अर्थतंत्र, नये परिवहन के साधन, वृहद औद्योगिक विकास, व्यापार, राजनीति, उत्खनन, सामाजिक चेतना और सामरिक स्थिति में बदलाव के कारण नगरों का अभ्युदय और विकास तेजी से होने लगा। इस युग में उन क्षेत्रों में अधिक नगर अस्तित्व में आये जहाँ उद्योग, व्यापार, परिवहन के साधन, उत्खनन पर्यटन और कृषि का विकास हुआ। इस प्रकार नगरों के अभ्युदय और विकास के लिए उत्तरदायी कारकों को निम्नवत सूचीबद्ध किया जा सकता है।

उत्पादन का आधिक्य

कृषि तथा अन्य प्राथमिक उत्पादनों के आधिक्य के कारण भण्डारण, संरक्षण और वितरण की प्रक्रिया उदित हुई जिसके लिए एक सुगम और सुरक्षित केन्द्र की आवश्यकता ने नगर रचना के लिए मानव समुदाय को उत्साहित किया। प्राचीन कालीन नगरों की उत्पत्ति में यह कारक बहुत महत्वपूर्ण था। यह प्रक्रिया आज भी क्रियाशील है। उत्तर भारत के नगरों के अभ्युदय में इस प्रक्रिया का महत्वपूर्ण योगदान है।

राजनीतिक कारक

सामन्तों, राजाओं और प्रशासकों ने सभी युगों में अपने प्रशासकीय कार्यों के सम्पादन के लिए राजधानी एवं मुख्यालय नगरों की स्थापना की। ऐसे नगर प्रशासन के साथ आर्थिक और सांस्कृतिक सत्ता के केन्द्र बन गये जैसे खजुराहो। यह प्रक्रिया सभी युगों में क्रियाशील रही है। आज भी अनेक नगरों का अभ्युदय इस प्रक्रिया से हुआ है जैसे दिल्ली, जयपुर और चण्डीगढ़ आदि।

धार्मिक और सामाजिक कारक

धर्म प्राचीन और मध्यकाल में नगरों के अभ्युदय का एक सशक्त कारक रहा है। यूरोप एवं एशिया के अनेक नगरों के अभ्युदय में धर्म की अह्म भूमिका रही है। चन्देल कालीन नगर खजुराहो इसका उदाहरण है। काशी और हरिद्वार जैसे नगरों का अभ्युदय ऐसे ही हुआ है। आधुनिक काल में धर्म के स्थल पर सामाजिक कारक अधिक सक्रिय है। वाराणसी इसका सबसे अधिक अच्छा उदाहरण है।

सुरक्षा

प्राचीन एवं मध्य युग में नगर निर्माण में सुरक्षा एक प्रधान कारक था। स्थल के चुनाव से लेकर नगर परकोटा के निर्माण तक नगर की सुरक्षा का विचार प्रधान रहा है। भारत के गढ़नगर ऐसे ही स्थापित किये गये। बुन्देलखण्ड में स्थित कालिंजर एवं अजयगढ़ ऐसे ही नगर है। आज सुरक्षा की परिभाषा बदल गई है। आज सामरिक दृष्टिकोण से मूल्यांकन कर छावनी नगर, नौसेना केन्द्र और वायुसेना केन्द्र स्थापित किये जाते हे। अम्बाला कैण्ट और विशाखापटनम् जैसे नगरों की स्थापना इसी उद्देश्य से की गई।

क्षेत्रीय केन्द्रीयता

किसी स्थान की केन्द्रीयता नगर अभ्युदय की आधारशिला बन जाती है। दिल्ली नगर प्राचीन काल से आधुनिक काल तक कई बार उजड़ने के बावजूद बसता रहा क्योंकि इसके लिए इसकी केन्द्रीयता उत्तरदायी रही है। कानपुर अपनी केन्द्रीयता के कारण एक छावनी केन्द्र से महानगर बन गया।

आर्थिक–व्यापारिक कारक

आदिकाल से आधुनिक काल तक आर्थिक और व्यापारिक कार्य नगर अभ्युदय के सशक्त कारक रहे है। मण्डी और बन्दरगाह नगर इसके प्रमाण है। बम्बई, कलकत्ता और हापुड़ का अभ्युदय इसी प्रक्रिया से हुआ।

औद्योगिक कारण

प्राचीन और मध्य काल में भी नगर शिल्प और कला के केन्द्र थे लेकिन आधुनिक काल में औद्योगिक क्रान्ति ने नगरों के अभ्युदय में सबसे सशक्त कारक के रूप में कार्य किया है। इस कारक ने जंगल में नगर रचना के लिए उत्साहित किया है। विश्व के कुछ देशों की अधिकांश नगरीय बस्तियों की स्थापना में यह कारक सर्वोपरि रहा है। जमशेदपुर, रूरेकेला जैसे नगर इसके प्रमाण है।

सांस्कृतिक कारक

सामाजिक व्यवस्था ने सांस्कृतिक उत्थान को जन्म दिया और सांस्कृतिक क्रिया कलापों ने नगर बसाने के लिए उत्साहित किया। मनोरंजन, शिक्षा, स्वास्थ्य और कला कौशल के कारण अनेक नगरों का उदय हुआ। शिमला, नैनीताल, दर्जीलिंग, आक्सफोर्ड, हालीउड आदि नगरों का अभ्युदय इसी प्रक्रिया से हुआ।

उत्खनन

खनिजों के उत्खनन के कारण भी नगरों की स्थापना की गई है। भारत में कोलार, झरिया, आसनसोल, सिंगरौली आदि नगरों का जन्म उत्खनन के कारण ही हुआ है।

परिवहन

परिवहन सभी युगों में नगर अभ्युदय का एक सशक्त कारक रहा है। नदी, परिवहन के कारण तटों पर नगर बसाये गये लेकिन अब स्थलीय, जलीय और वायु परिवहन के विकास ने नगर बसाव की दिशा को मोड़ दिया है। आज परिवहन चौराहें नगर स्थापना के लिए सबसे उपयुक्त माने जा रहे है। मुगलसराय, कटनी, इटारसी इसका सबसे अच्छा उदाहरण है।

खजुराहो अंचल में नगरीय बसाहट

हमें ऐतिहासिक खोजों से ज्ञात होता है कि सम्भवतः 5000 ईसा पूर्व तक नगर अस्तित्व में आ चुके थे। विश्व में नगर जीवन कब से आरम्भ हुआ इस पर विद्वानों में मतभेद है। किंग्सले डेविस का विचार है कि ईसा से 6000 वर्ष से 3000 वर्ष पूर्व तक बीच का समय ऐसा है जिसमें नगर अस्तित्व में आ चुके थे तथा ईसा से 3000 वर्ष पूर्व ऐसे नगरों का जन्म हो चुका था जिनका हम वास्तविक रूप से नगर का नाम दे सकते है। ग्रिफिथ टेलर का कथन है कि लगभग 6000–50000 ईसा पूर्व नगर सबसे पहले पृथ्वी पर देखने में आए। आरम्भ में नील का दजला फरात नदियों के घाटियों में नगरों का विकास हुआ। यहाँ पर नगरों का जन्म ईसा से 4000 से 2500 वर्ष पूर्व हो चुका था।[4] इसी क्रम में भारत में सिन्धु में हडप्पा, मोहनजोदड़ों आदि चीन में शियांग, योरप में ऐथन्स व स्पार्टा, अमरीका में टिकल नगर की सर्जना हुई। सर्जना के साथ इनका विकास शुरू हुआ।

उल्लेखनीय है कि शुरू में नगरीय विकास का जनसंख्या वृद्धि पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। प्रारंभिक नगरीय सभ्यता का आधार कृषि था। जल एवं कृषिगत सुविधाओं के आधार पर ही नगरों के विकास का क्रम बढ़ता है और इसी के साथ अन्य मानवीय सुविधायें वहां एकत्र होने लगती है। संभवतः प्रारंभ में नगरों की जनसंख्या ग्रामीण क्षेत्रों की अपेक्षा कम थी।[5]

गैलियन की यह सोच सर्वथा उचित प्रतीत होती है कि उत्तर पाषाण काल के मानव में नगरीयकरण की दिशा में पहला कदम रखा था। यह स्थिति विश्व ही नहीं भारत के विभिन्न अंचलों के लिए उपयुक्त प्रतीत होती है। खजुराहो अंचल में भी इस स्थिति को माना जा सकता है। इस अंचल का मानव प्रारंभ में अपनी

क्षुधा पूर्ति के लिए शिकार, कन्दमूल व फलफूल पर निर्भर करता था। कालान्तर में उसने जहाँ पर परिस्थितियां अपने अनुकूल पाई वहीं पर बस गये और कृषि कर्म से जीविका चलाने लगा। इसी कृषि कार्य के लिए नदी घाटियों का अंचल सर्वथा अनुकूल था। अतः खजुराहो अंचल के नदी घाटियों में जुताई बुआई का कृषि कार्य करते हुए वहीं बस गये। यहाँ के पठारी क्षेत्रों में केन, धसान व वेतवा नदियाँ प्रमुख है। संभवतः इन्हीं नदियों की घाटी में सर्व प्रथम नगरीय बसाहट शुरू हुई होगी। मानव के कृषि कर्म से कृषि क्रांति का प्रादुर्भाव हुआ। इस क्रान्ति से प्रभावित होकर यहाँ के मानव ने एक स्थान पर रहने का कार्य शुरू किया। वह कृषि के साथ–साथ पशुओं को भी पालने लगा। कृषि के अतिरिक्त उत्पादन के विनिमय की भावना पैदा की इससे स्वभावतः यातायात की सुविधा विकसित हुई। आवश्यकता बढ़ी और उसके अनुरूप उत्पादन में वृद्धि होने लगी। एक लघु नगरी बस्ती से दूसरी लघु नगरी बस्ती का सम्पर्क बढ़ा। इससे यहाँ के मनुष्यों को एक स्थान पर रहने के साथ–साथ अन्य कार्यों को करने का प्रोत्साहन मिला। कृषि कार्य के साथ ही साथ यहाँ का मनुष्य हल बनाने, गाड़ी का पहिया बनाने, कपड़ा बुनने के साथ ही अपने साज श्रृंगार की ओर भी उधृत हुआ। यहाँ के लागों का यह नगरीकरण के लिए पहला कदम था और वहीं से नगरीय सभ्यता ने अपना कदम आगे बढ़ाया। गिस्ट व हालवर्ट जैसे विद्वानों की सोच है कि "सभ्यता की उत्पत्ति के समान ही नगर की उत्पत्ति भी भूत के अंधकार में खो गई।"[6] इस भूत को पुरातत्वीय उत्खननों से ही उजागर किया जा सकता है जिसे आज के विद्वान धीरे–धीरे कर रहें है।

सारांश

निष्कर्षतः जिस आदिम सभ्यता ने विन्ध्यांचल के गहवारों में जन्म लिया था, कालान्तर में वह सभ्यता घाटी के गहबारों से निकलकर समीपवर्ती केन व वेतवा नदी की घाटी में धीरे–धीरे फैलने लगी। जिसके अवशेष इस अंचल में आज भी भूमि के अन्दर दबे पड़े है। इन आदिम नगरों के प्रादुर्भाव में आर्थिक ही नहीं सामाजिक व धार्मिक कारण भी रहें होगें। वास्तव में ये नगर समकालीन मानव की वृद्धि की अभिव्यक्ति है जो उसके व्यक्तित्व के सभी गुणों चाहें वह सामाजिक हो या धार्मिक हो या आर्थिक हो सभी छाप उन पर पड़ती है। यह छाप यहाँ के उन आदिम नगरों पर भी पड़ी होगी।

सन्दर्भ

1. अग्रवाल, के.एल., विन्ध्य क्षेत्र का ऐतिहासिक भूगोल, पृ. 49.
2. प्रो. राधेशरण द्वारा इटहा, शिवपुरवा व नीगा में नगरीय सभ्यता के अवशेषों की खोज, दैनिक पत्रों में प्रकाशित (1984–85)
3. राव, बी.पी. एवं शर्मा, एन., नगरों का उद्‌भव एवं विकास, पेज 138.
4. बंसल–नगरीय भूगोल, पृ. 44–45.
5. 4500 वर्ष पूर्व मध्यपूर्व एशिया के उपजाऊ अर्धचन्द्राकार क्षेत्र में ग्रामीण जनसंख्या की घनत्व 2500 व्यक्ति प्रति 100 वर्गमील था, जबकि मैसोपोटामिया मैदान की नगरीय बस्ती समेरिया में यह घनत्व 5000 व्यक्ति प्रति 100 वर्गमील था। इस प्रकार कृषि क्षेत्रों व नगरीय क्षेत्रों में जनसंख्या घनत्व का अनुपात 1:2 था। बंसल – नगरीय भूगोल, पृ. 46
6. Like the origin of civilization itself, the origin of the city is lost in the obscurity of the past, गिस्ट – बंसल द्वारा संदर्भित, वहीं पृ. 47.